REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.2331 (UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 7 | APRIL - 2018

# वृद्ध महिलाओं का सामाजिक उपचार :एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. हितेन्द्र सिंह राठौड़[1] , कुमोदिनी शर्मा[2]
[1]सह–आचार्य , वनस्थली विद्यापीठ, राज.
[2]शोधार्थी.

## सारांश

भारतीय संस्कृति एवं समाज में बुजुर्गों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। परन्तु वर्तमान में धन का महत्व, स्वार्थपरायणता, संयुक्त परिवारों का विघटन, नगरीकरण, अंतःपीढ़ी संघर्ष के कारण वृद्धों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। आज सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि जहाँ जिस समाज और संस्कृति में वृद्धों को पूजनीय समझा जाता था। सभी क्रियाकलाप में उनको प्राथमिता दी जाती थी। वे आज उपेक्षित जीवन जी रहे हैं। ऐसा अनुमान है कि वृद्धों की जनसंख्या 2026 में लगभग 18 करोड़ के आस–पास पहुँच जाएगी। इतनी बड़ी जनसंख्या का सामाजिक उपचार एक विचारणीय प्रश्न है। प्रस्तुत अध्ययन वृद्ध महिलाओं के सामाजिक उपचार पर केन्द्रित है।

**संकेत शब्द– वृद्धावस्था, सामाजिक विनमय, सामाजिक वातावरण।**

## परिचय–

भारतीय संस्कृति एवं समाज में आरम्भ से ही बुजुर्गों का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है। परिवार के सबसे ज्यादा बुजुर्ग व्यक्ति को ही परिवार का मुखिया बनाकर रखने की हमारी परम्परा रही है। किन्तु आज समाज में बढ़ते पश्चिमी प्रभाव के कारण बुजुर्गों का महत्व कम होता चला जा रहा है। यहाँ तक कि बुजुर्ग अब अवेहलना के पात्र बन चुके हैं।

जवानी का एक दिन बुढ़ापे में बदल जाना प्रकृति का शाश्वत नियम है। जीवन को सुखमय बनाने के लिए इस परिवर्तन को स्वीकार करना जरूरी है क्योंकि परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। इसी नियम के अन्तर्गत हमारे शरीर में भी परिवर्तन होते रहते है।

वृद्धजन समाज के आधार स्तम्भ होते हैं किन्तु यह अत्यन्त दुःख का विषय है कि वर्तमान युग के युवाओं में बुजुर्गों के प्रति सम्मान का भाव तेजी के साथ लोप होता जा रहा है। जिसके परिणामस्वरूप बुजुर्गों की हालत अत्यन्त ही कष्टकारी होती जा रही है। आज परिवार में प्रत्येक सदस्य अपने बुजुर्गों को बोझ समझता हैं। विश्व की जनसख्या लगातार वृद्ध होती जा रही है। जिसके संबंध में डब्ल्यू.एच.ओ. की 67वीं विश्व स्वास्थ्य सभा, 2016 की रिपोर्ट के अनुसार, सन् 2000 से 2050 तक 60 वर्ष एवं उससे अधिक उम्र वाले लोगों की जनसंख्या विश्व में 11 प्रतिशत से 22 प्रतिशत तक बढ़ने का अनुमान है।(Ilknur Metion Akten,2018)

## वृद्ध महिलाओं की स्थिति

**1. वैदिक युग में वृद्ध महिलाओं की स्थिति**–वैदिक युग में वृद्ध महिलाओं की स्थिति अत्यन्त उन्नत थी। उन्हें देवी तुल्य माना जाता था। उन्हें समाज एवं परिवार में उचित स्थान दिया जाता था। परिवार की सत्ता बुजुर्गों के हाथ में होती थी। परिवार का कोई भी फैसला उनकी सलाह के बिना नहीं लिया जा सकता था। उन्हीं की सत्ता एवं प्रभाव के कारण पहले संयुक्त परिवार हुआ करते थे जो परिवार के सदस्यों को एक डोर में बाँधे रखते थे।(डॉ. अल्पना विमल, 2004)

**2. प्राचीन युग में वृद्ध महिलाओं की स्थिति**–प्राचीन भारत में वृद्ध महिलाओं को उच्च सामाजिक प्रस्थिति प्राप्त थी। उन्हें परिवार के मुख्य सदस्य के रूप में आदरणीय तथा सम्मानजनक पद प्राप्त था। उन्हें ज्ञान और बुद्वि का भंडार समझा जाता था। वृद्ध महिलाओं के निर्णय ही पारिवारिक संचालन को अन्तिम रूप देते थे। वृद्ध महिलाओं को एक वटवृक्ष के रूप में परिवार की इच्छाओं की पूर्ति करने वाला तथा अपनी छत्रछाया में नवीन पीढ़ियों को सुरक्षित रखने वाला माना जाता था।(डॉ. अल्पना विमल, 2004)

**3. मध्य युग में वृद्ध महिलाओं की स्थिति**–मध्य युग में भी वृद्ध महिलाओं का परिवार में प्रमुख स्थान होता था तथा संयुक्त परिवार होने के कारण परिवार द्वारा सम्पादित समस्त कार्य–कलापों में वृद्ध महिलाओं को सर्वाधिक महत्व दिया जाता था और उनकी राय को सर्वाधिक प्राथमिकता दी जाती थी। तत्कालीन सामाजिक जीवन मूल्यों के अनसार वृद्व महिलाओं की देखभाल व

सेवा परिवार के अन्य सदस्यों का निर्विवादित दायित्व माना जाता था। वृद्ध महिलाओं की सेवा, शुश्रुषा करना प्रत्येक परिवारजन का नैतिक कर्तव्य माना जाता था तथा इनकी उपेक्षा निन्दनीय मानी जाती थी।(कु. वंदना, 2012)

**4. आधुनिक युग में वृद्ध महिलाओं की स्थिति–** आधुनिक युग में वृद्ध महिलाओं की समस्याओं में दिन–प्रतिदिन बढ़ोत्तरी होने के कारण एक विकराल सामाजिक समस्या ने जन्म ले लिया है। वर्तमान समय में बदलती हुई परिस्थितियों के कारण वृद्ध महिलाओं के सामने अनेक समस्याएं उत्पन्न हो गई है। जिसका प्रमुख कारण संयुक्त परिवारों का विखंडन है। जिसके परिणामस्वरूप अकेलापन, आर्थिक निर्भरता, उपेक्षा की पीड़ा, स्वास्थ्य का गिरता स्तर एवं पीढ़ियों में अन्तर होना है। आधुनिकीकरण तथा लोकतांत्रिकीकरण के दुष्प्रभाव ने वृद्ध महिलाओं की स्थिति पर गलत प्रभाव डाला है। जिससे वृद्ध महिलाएँ उपेक्षा एवं तिरस्कार की शिकार हो रही है, पहले उन्हें देवी माना जाता था वहीं आज उन्हें न तो देवी के समान एवं न गुरु के समान समझा जा रहा है और उन्हें न ही वह सम्मान और अपनापन मिल रहा है जो उन्हें प्राचीनकाल में मिलता था। परिवार की सत्ता वृद्ध महिलाओं के हाथ से निकलकर अब युवा पीढ़ी के हाथों में आ गई है। परिवार का कोई भी फैसला युवापीढ़ी स्वयं लेने लगी है। पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव के कारण समाज और परिवार में अब उनकी स्थिति निम्न हो गयी है। वह असहाय और अनुपयोगी वस्तु बनकर रह गयी है। आज के बदलते समय में संस्कारों में काफी कमी आ रही है साथ ही वृद्ध महिलाओं की उपयोगिता न रहने पर उन्हें वृद्धाश्रमों में भेजा जाने लगा है।

## अनुसंधान प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन वृद्ध महिलाओं का सामाजिक उपचार : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन पर केन्द्रित है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य वृद्ध महिलाओं की समस्याएँ एवं उनके उपचार के बारे में जानना है। अध्ययन का क्षेत्र मथुरा जनपद है। प्रस्तुत अध्ययन के लिए 400 वृद्ध महिलाओं को निदर्शन के रूप में शामिल किया गया है। अध्ययन में समानुपातिक संस्तरित निदर्शन का प्रयाग किया गया है। प्राथमिक तथ्यों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है। तथ्यों का विश्लेषण वर्णात्मक के साथ ही अन्य अनुसंधानों के निष्कर्षों एवं सिद्धांतों के संदर्भ में किया गया है।

## वातावरणीय सांचा/दबाव

'योग्यता मॉडल' किसी भी व्यक्ति के भौतिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों के बीच लगातार चल रही परस्पर क्रिया तथा भौतिक एवं सामाजिक वातावरण को दर्शाता है। वातावरण एक बड़े समाज, सम्प्रदाय, आस–पड़ोस या घर के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है। वातावरणीय सांचा/दबाव को उन भागों के रूप में परिभाषित किया गया है, जो कि एक व्यक्ति पर बदलाव, ढ़लने या जबाव देने का दबाव बनाते हैं। पर्यावरणीय दाब मॉडल को हम कई विषयक दृष्टिकोणों से देख सकते हैं। सामाजिक कार्य के सिद्धांत का मूल, उदाहरण के लिए व्यक्ति तथा उसका वातावरण, तथा अभ्यास एवं नीति निर्धारण करना जिससे कि व्यक्ति तथा उसके सामाजिक वातावरण के मध्य बेहतर सामंजस्य बनाया जा सके। स्वास्थ्य देखभाल करने वाले भी अब अधिक संख्या में सामाजिक तथा भौतिक वातावरणीय कारकों को ध्यान में रखने की आवश्यकता को समझने लगे हैं। (उदाहरणस्वरूप, पारिवारिक देखभाल करने वाल, अनौपचारिक समर्थक तथा वृद्धों की रहने की स्थिति आदि) जिससे कि उनकी स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं को समझा जा सके।

वास्तुकार तथा विकलांगों की वकालत करने के नए तरीके ढूंढने में लगे हुए हैं। जिससे कि उनके लिए भौतिक वातावरण को सुगम तथा संगत बनाया जा सके। मनोवैज्ञानिक भी यह जानने में इच्छुक हैं कि किस प्रकार हम वातावरण को बदल सकते हैं, जिससे कि किसी व्यक्ति की नए कार्यों को सीखने तथा करने की क्षमता बढ़ाई जा सके तथा परिचित कार्यों जैसे कि वाहन चलाना, परीक्षा देना तथा स्वयं की देखभाल आदि में दक्षता बढ़ाई जा सके। समाजशास्त्री उन तरीकों का अध्ययन करते हैं। जिससे कि वृहत पर्यावरण (बड़ा आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक परिवेश) किसी व्यक्ति पर तथा व्यक्ति द्वारा लिए गए निर्णयों का वृहत पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव को समझा जा सके। क्योंकि इस मॉडल की संकल्पनाए वृद्धों की परिस्थिति को समझने तथा नए सुधार कर उनके जीवन स्तर को ऊँचा करने में सहायक है।

वातावरणीय दाब की सीमा बहुत हल्के से काफी अधिक तक हो सकती है। उदाहरणस्वरूप किसी संस्थान में यदि कोई व्यक्ति स्वयं की संरक्षा के लिए जिम्मेदार नहीं, तो उस पर वातावरणीय दबाव कम होगा तथा उसके पास कुछ संसाधन मौजूद हो सकते हैं, जो कि उसकी इन्द्रियों को उत्तेजित या उसके मन को चुनौती दे सकते हैं। अन्य वातावरण भी कई प्रकार का दबाव बना सकते हैं। उदाहरण के लिए एक ऐसा परिवार जिसमें कई पीढ़ियों के लोग रहते हैं, म वृद्धजनों का काफी अहम किरदार होता है। यदि कहीं रहने की व्यवस्था में लोगों की संख्या में बढ़ोत्तरी होती है, या किसी नए घर में स्थानांतरण करने पर पर्यावरणीय मांग बढ़ जाती है। जिस प्रकार मांगें बदलती हैं, लोगों को भी बदलावों के अनुकूल ढ़लना पड़ता हैं, जिससे कि वे अपनी सक्षमता को बरकरार रख सकें।

लोग अपने उच्चतम स्तर पर उस समय कार्य कर पाते हैं। जब वातावरणीय दबाव उनकी सहनशक्ति से थोड़ा सा अधिक हो। अन्य शब्दों में वातावरण लोगों को उनकी क्षमताओं को चुनौती देने का कार्य करता है। परन्तु पराजित करने का नहीं। यदि पर्यावरणीय दबाव का स्तर अत्यधिक हो जाता है, तो व्यक्ति पर अत्यधिक तनाव तथा अधिभार बढ़ जाता है। यदि वातावरणीय दबाव किसी व्यक्ति के सहने की क्षमता से कम होता है, तो संवेदी विघटन, बोरियत, लाचारी आदि होने लगते हैं। परन्तु हल्के से मध्यम पर्यावरणीय दाब यदि हल्का या किसी व्यक्ति के ढ़लने की क्षमता से ठीक निचले स्तर पर होता है, तो यह सर्वाधिक आराम की स्थिति होती है। इसीलिए व्यक्ति को ऐसी परिस्थिति में चुनौती देना आवश्यक होता है, जिससे कि बोरियत

तथा अपर्याप्त उत्तेजना न हो। किसी भी परिस्थिति में चाहे अत्यधिक दाब या कम दाब हो, किसी व्यक्ति की अनुकूलन क्षमता को बढ़ाने के लिए वातावरण बदलना आवश्यक होता है, जिससे कि उसके जीवन का स्तर सुधारा जा सके।

''वैयक्तिक दक्षता'' भी एक संकल्पना है जो कि इस मॉडल के केन्द्र में है। इसे किसी व्यक्ति की भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में कार्य कर पाने की अधिकतम सीमा के रूप में परिभाषित किया है। कुछ क्षमताएँ जो कि किसी व्यक्ति को उसके वातावरणीय दाब के अनुकूल ढ़लने में सहायक होती है, ये इस प्रकार हैं–अच्छा स्वास्थ्य, समस्या सुलझाने का कौशल, सीखने का कौशल, तथा जीवन के बुनियादी जैसे कि खाना बनाना, पहनना, सजना आदि। जितना अधिक किसी व्यक्ति की दक्षता होगी, उतनी ही अधिक उसकी पर्यावरणीय दाब को सहने की शक्ति होगी। अतः एक वृद्ध व्यक्ति जिसकी शारीरिक अक्षमताएँ अधिक हो तथा जीर्ण रोगों से पीड़ित होने के कारण उसकी शारीरिक दक्षता कम हो गई हो, उसके लिए उसकी भौतिक जरूरतें पूरा करना मुश्किल कार्य होगा। वहीं, दूसरी ओर, यही व्यक्ति हो सकता है कि मनोवैज्ञानिक रूप से दक्ष होने के कारण दोस्तों के साथ खुश रहता हो, तथा जीवन से संतुष्ट हो।(Hooyaman Nancy R., Kiyak H. Asuman, 2009)

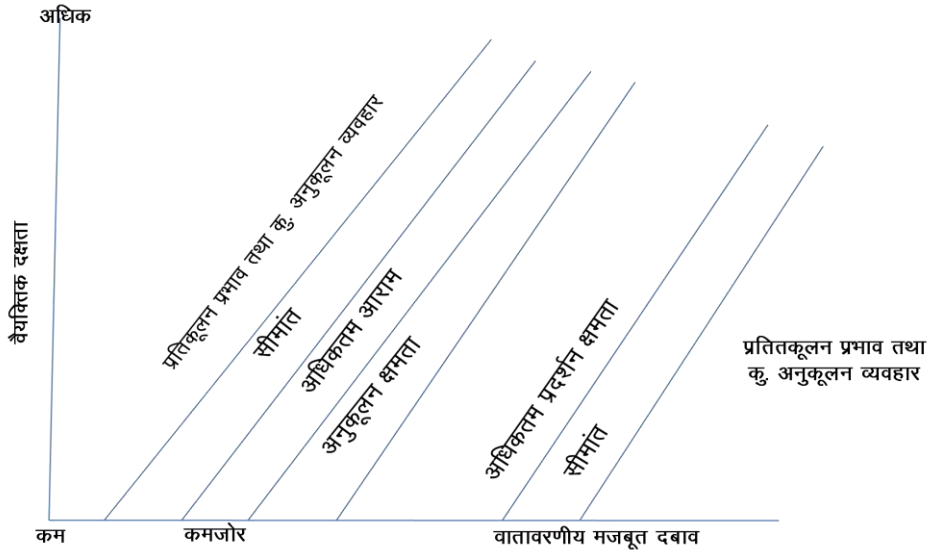


व्यक्ति–पर्यावरण लेन–देन के प्रभाव

वृद्ध महिलाओं का सामाजिक उपचार

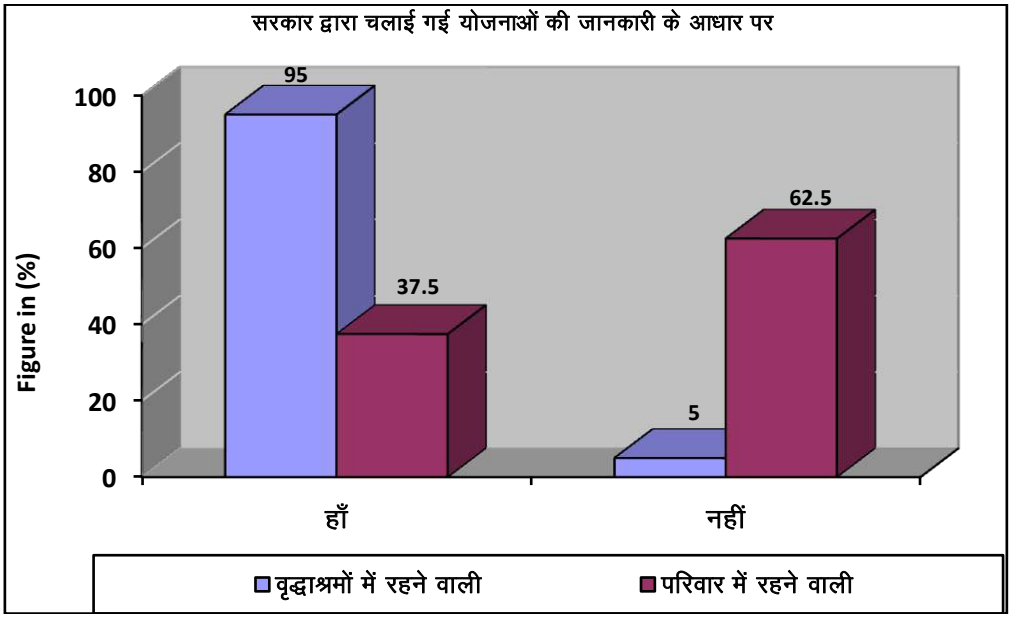


उपरोक्त बार चित्र के आधार पर स्पष्ट होता है कि वृद्धाश्रम में रहने वाली अधिकांश 95 प्रतिशत वृद्ध महिलाओं को सरकार द्वारा चलाई गई योजनाओं की जानकारी प्राप्त है। साथ ही 37.5 प्रतिशत परिवार में निवास करने वाली वृद्ध महिलाओं ने

बताया कि उन्हें सरकारी योजनाओ की जानकारी प्राप्त है। जबकि 62.5 प्रतिशत वृद्ध महिलाएँ बताती है कि उन्हें सरकारी योजनाओं की जानकारी प्राप्त नहीं है। इसका कारण उनमें जागरूकता का अभाव है।

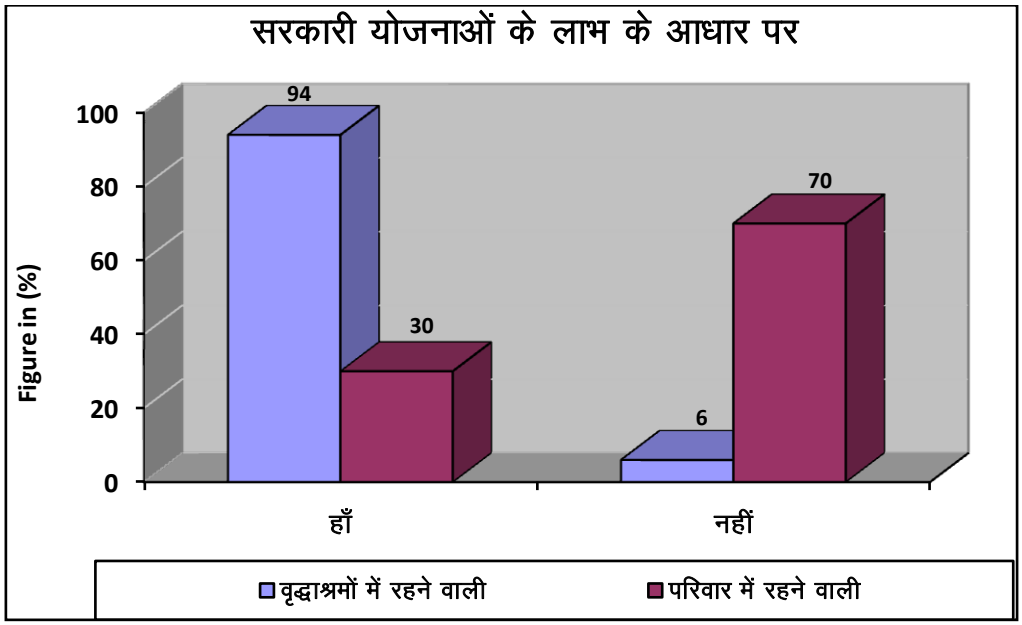


उपरोक्त बार चित्र के आधार पर स्पष्ट होता है कि वृद्धाश्रम में निवास करने वाली अधिकांश 94 प्रतिशत वृद्ध महिलाएँ सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त कर रही हैं जबकि परिवार में रहने वाली केवल 30 प्रतिशत वृद्ध महिलाएँ ऐसी थी जिन्हें सरकारी योजनाओं से लाभ प्राप्त था। साथ ही 70 प्रतिशत परिवार में निवास करने वाली वृद्ध महिलाओं में जानकारी के अभाव के कारण वह सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं उठा पा रही थीं। उनसे पूछने पर उन्होने कारण बताया कि कम शिक्षित होने के कारण वह सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं उठा पा रही है। साथ ही वह बताती है कि आवेदन पत्रों की खानापूर्ति करने में काफी कठिनाईयाँ आती है। सरकारी विभागों में बढ़ते भ्रष्टाचार के कारण तथा शरीर से कमजोर होने के कारण भागदौड़ तथा अधिक प्रयास नहीं कर पा रही है। साथ ही परिवारजन भी कोई सहायता नहीं करते हैं जिसके कारण सरकारी योजनाओं का लाभ उठा पाने में असमर्थ है।

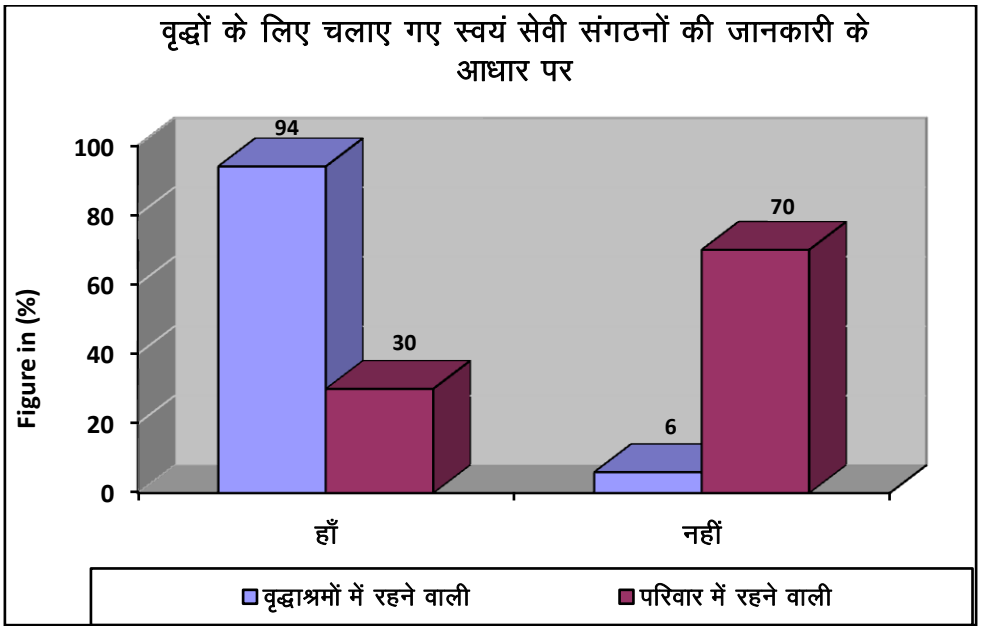

उपरोक्त बार चित्र के आधार पर स्पष्ट होता है कि वृद्धाश्रम में निवास करने वाली अधिकांश 94 प्रतिशत वृद्ध महिलाओं को स्वयं सेवी संगठनों की जानकारी प्राप्त है और इससे वे लाभ भी प्राप्त कर रही है जैसे सुलभ इण्टरनेशनल संस्था द्वारा वृद्ध महिलाओं को 2000/– रूपये मासिक आय भी प्राप्त हो रही है। जबकि परिवार में रहने वाली किसी भी वृद्ध महिला को स्वयं सेवी संगठनों के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं है।

## वृद्ध महिलाओं के अनुसार सामाजिक उपचार

वृद्धाश्रम एवं परिवार में रहने वाली वृद्ध महिलाओं से जब यह पूछा गया कि वृद्ध महिलाओं का सामाजिक उपचार किस प्रकार से संभव है तो पाया गया कि सभी वृद्ध महिलाओं ने बताया कि वृद्ध महिलाओं के सामाजिक उपचार के लिए समाज को चाहिए कि वृद्ध महिलाओं की समस्याओं को समझे उनकी उपेक्षा न करें, उन्हें समाज से अपनापन एवं सम्मान दिया जाए। साथ ही वृद्ध महिलाओं के अनुभवों को सुना जाए तथा जो वृद्ध महिलाएँ अकेली हैं जिनका कोई सहारा नहीं है उनकी पहचान की जाए तथा उन्हें किसी न किसी प्रकार की सहायता दी जाए। साथ ही वृद्धावस्था की एक बड़ी समस्या स्वास्थ्य की है। स्वास्थ्य के लिए उन्हें उचित चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाए। स्वास्थ्य के साथ ही वृद्ध महिलाओं को अकेलेपन की समस्या भी है जिसके लिए उनसे जिसके पास भी कोई समय हो वह उनसे बातचीत करें, अतः समाज द्वारा वृद्धाएँ यह चाहती हैं कि पहले तो वृद्धों का एक पब्लिक स्फीयर था जिसमें वह सभी अपनी बात कह पाती थी। परन्तु वर्तमान में आधुनिक साधनों के कारण परिवार का स्वरूप बदल गया है भौतिकता आ गई है तकनीकी आ गई है जिसके कारण लोगों के पास समय ही नहीं है कि वे वृद्धाओं के साथ वार्तालाप करें उनका मानना है कि वृद्धाओं को तो छोड़ो आज तो युवा भी इतना मोबाइल फोन में व्यस्त है कि आपस में वार्तालाप ही नहीं करता है। साथ ही वृद्ध महिलाओं ने बताया कि वह तो तकनीकी में व्यस्त रहते हैं परन्तु हम लोग तो तकनीकों से अछूते हैं हमारे लिए ऐसी कोई तकनीकी हो जिसे हम आसानी से समझ सकें। अशिक्षित होने के कारण हम इनका उपयोग नहीं कर पाते हैं। साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि अब हमारे पास बच्चों को देने के लिए कुछ नहीं है परन्तु हम उन्हें अपने अनुभव, प्यार और समय को दे सकते हैं, तो क्या बच्चे हमें अपनापन एवं सम्मान नहीं दे सकते हैं। जब हमने पूरा जीवन उनकी खुशियों के लिए समर्पित कर दिया तो क्या वे जीवन के अतिम समय में वो हमारा साथ नहीं दे सकते हैं वृद्धाओं ने यह भी बताया कि हमारी सहायता के लिए कानून भी बनना चाहिए और उसके प्रयोग के लिए हमारी मदद भी करनी चाहिए। यद्यपि हम कानून वगैराह के मामलों में नहीं पड़ना चाहते हैं इससे बदनामी होती है, परन्तु कुछ ऐस कानून जिससे बदनामी भी न हो और मदद मिल जाए। यह सब सोचकर हमें बहुत तनाब होता है।

## सैद्धांतिक समीक्षा

सामाजिक जराविज्ञान के वातावरणीय परिप्रेक्ष्य के अनुसार किसी भी व्यक्ति के भौतिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियों के बीच लगातार चल रही परस्पर क्रिया तथा भौतिक एवं सामाजिक वातावरण को दर्शाता है। वातावरण एक बड़े समाज, सम्प्रदाय का घर के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है। वातावरणीय दबाव एक व्यक्ति पर बदलाव या जबाव देने का दबाव बनाते हैं। वातावरणीय दाब की सीमा बहुत हल्के से काफी अधिक तक हो सकती है। इस परिप्रेक्ष्य के अनुसार किसी भी परिस्थित में चाहे अत्यधिक दाव या कम दाव हो किसी व्यक्ति की अनुकूलन क्षमता को बढ़ाने के लिए वातावरण बदलना आवश्यक होता है जिससे कि उसके जीवन का स्तर सुधारा जा सके। वैयक्तिक दक्षता भी इसके केन्द्र में है। कुछ अक्षमताएँ जो कि किसी व्यक्ति को उसके वातावरणीय दाब के अनुकूल ढलने में सहायक होती है, जैसे–अच्छा स्वास्थ्य, समस्या सुलझाने का कौशल, सीखने का कौशल आदि। जितना अधिक किसी व्यक्ति की क्षमता होती उतनी है उसकी पर्यावरणीय दाब को सहने की शक्ति होगी। अतः एक वृद्ध व्यक्ति जिसकी शारीरिक अक्षमताएँ अधिक हो तथा जीर्ण रोगों से पीढ़ित होने के कारण उसकी शारीरिक दक्षता कम हो गई हो उसके लिए उसकी भौतिक जरूरतें पूरा करना मुश्किल कार्य होगा। दक्षता मॉडल में वृद्धजनों के जीवन स्तर सुधारने के लिए हस्तक्षेप तथा रोकथाम नीतियाँ बनाने की काफी योग्यताएँ हैं। वृद्धजनों पर आधारित सीमाओं का लक्ष्य वातावरणीय माँग कम करने तथा समर्थन बनाना होता है। यह सुविधाएँ भौतिक तथा सामाजिक वातावरण अथवा दोनों को परिवर्तित करने पर केन्द्रित होती हैं। भौतिक बदलाव तथा सामुदायिक सेवाएँ किसी वृद्ध व्यक्ति के अनुकूलन तथा दैनिक परेशानियों के सामना करने के भार को कम करती है। इस प्रकार के प्रबंध कुछ वृद्धजनों की खुशहाली के लिए आवश्यक है। विशेषतः उनके लिए जिन्हें औपचारिक तथा अनौपचारिक सेवाप्रदाता से वातावरणीय अनुकूलन की आवश्यकता होती है।

प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक जराविज्ञान के व्यक्ति वातावरण परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत वातावरणीय दबाव, पर्यावरणीय हस्तक्षेप के आधार पर विश्लेषण करने पर पाया कि परिवार में रहने वाली वृद्ध महिलाएँ परिवार का वातावरण प्रोत्साहक न होने के कारण उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। परिवार उनकी जिम्मेदारी न उठाकर उन्हें बोझ समझ रहा है। जबकि वृद्धाश्रम में रहने वाली वृद्ध महिलाओं को वृद्धाश्रम में विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ एवं सेवाओं के कारण उन्हें वहाँ किसी भी प्रकार की समस्या एवं अकेलेपन की समस्या का सामना नहीं करना पड़ रहा है। अतः इस प्रकार के उपायों के कारण वहाँ वातावरण वृद्धाओं के अनुकूल है और उन्हें वहाँ संतुष्टि है। साथ ही वृद्धाश्रम में वृद्धाओं को कुछ वैयक्ति दक्षताएँ जो कि किसी व्यक्ति को उसके वातावरणीय दाब के अनुकूल ढलने में सहायक होती है, जैसे सीखने का कौशल के अंतर्गत, मोमबत्ती बनाना, अगरबत्ती बनाना आदि। जिससे उनकी दक्षता अधिक हो रही है और उनमें पर्यावरणीय दबाव को सहने की शक्ति में वृद्धि हो रही है। अर्थात् उन्हें वैयक्तिक दक्षता बढ़ने से आय प्राप्त हो रही है। जो उन्हें सम्मानपूर्वक जीवन–यापन में मदद कर रहा है।

अतः निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि वृद्ध महिलाओं के सामाजिक उपचार के लिए उनके अनुकूल सामाजिक वातावरण आवश्यक है। वृद्धावस्था में वृद्धाओं को अनेक प्रकार की शारीरिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिसके लिए

उनके अनुकूल वातावरण प्रदान किया जाए जिससे वे बदलती स्थिति के साथ सामंजस्य बिठा सकें। वृद्धाश्रम भी वृद्ध महिलाओं के सामाजिक उपचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

## संदर्भ सूची :


1 Ilknur Metion Akten (2018) : The Role of Nurse in Rational Drug Use in the Elderly.https://www.researchgate.net.
2 डॉ. अल्पना विमल (2004) : समायोजन का समाजशास्त्र, आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स, जयपुर.
3 As 2 above.
4 कु. वंदना (2012) : वैश्वीकरण के दौर में विखंडित परिवार बहुजन, समाज कल्याण, मासिक पत्रिका, नई दिल्ली.
5 Hooyaman Nancy R., Kiyak H. Asuman (2009) : Social Geron Tology : A Multidisciplinary perspective, Pearson Publication, 9th Edition, UK.